अवसरों का शहर:

मुंबई

मैं मुंबई हूँ, अवसरों
का शहर

जहाँ आप आसमानी
ऊँचाइयों तक पहुँच सकते हैं
या फिर समुंदरी गहराइयों

सदियों से, मैंने सपने देखने वालों
को अपने किनारों पर लाया है,

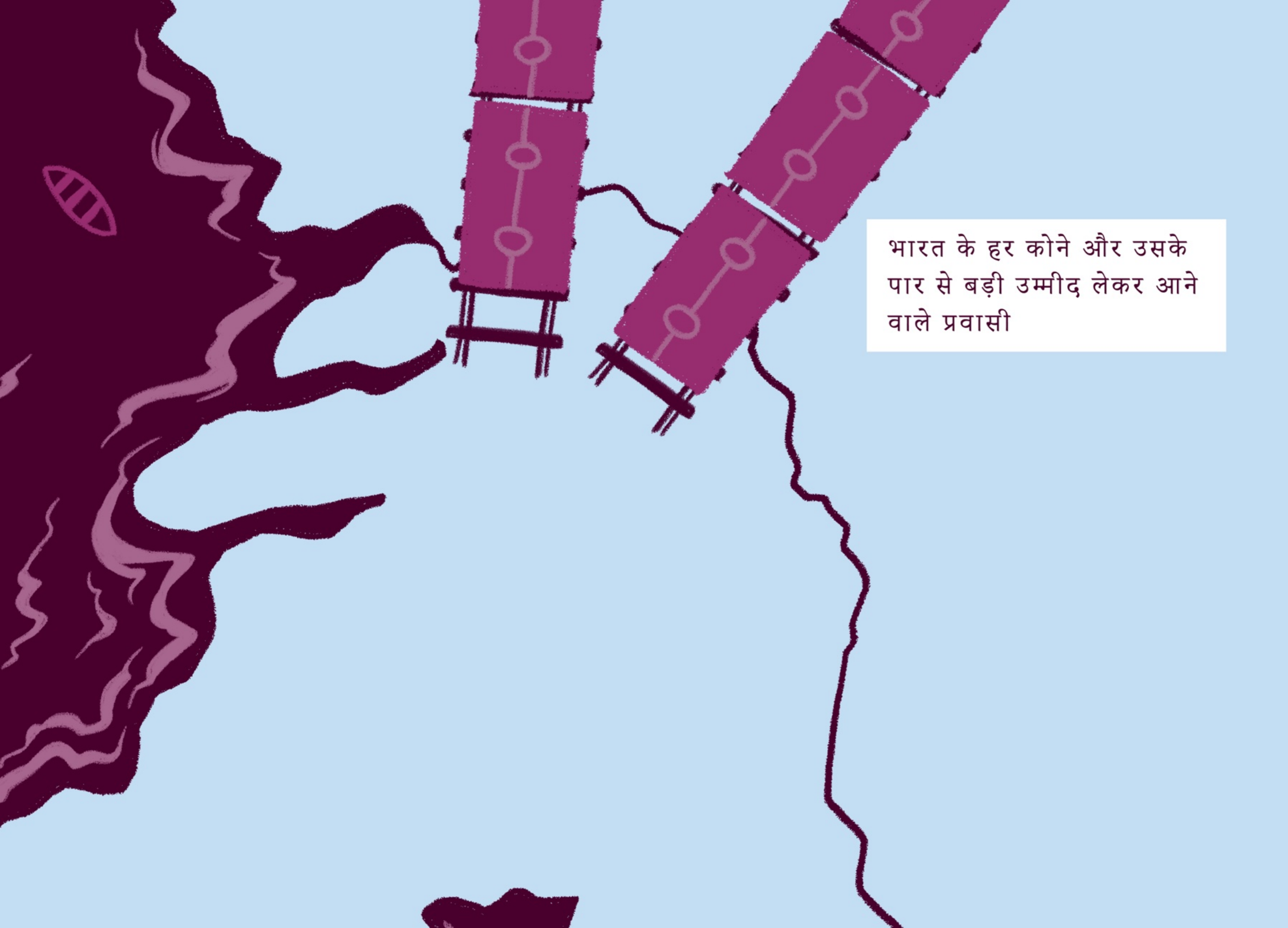
भारत के हर कोने और उसके
पार से बड़ी उम्मीद लेकर आने
वाले प्रवासी

जो शिक्षा और कर्म के माध्यम से अपने भविष्य की नींव बनाना चाहते हैं। वे आते हैं उत्तर की हरे भरे भूमि से-

-दक्षिण के शांत समुद्र तटों से-

-पूरब के छोटे-छोटे शहरों से।

वे यहाँ रोज़ाना आते-जाते हैं।
सुबह-शाम, लाखों की संख्या में।

उन रेलगाड़ियों से जो मेरी
नस-नस में दौड़ती हैं।

उनमें से एक है राहुल - एक युवक जिसका दिल है टूटा लेकिन रखता है एक नई शुरुआत की उम्मीद।
जो कुछ है वह उसने अपने हाथों में है समेटा,

एक झोला जिसमें है उसका सामान और एक पदवी,
शिक्षा, जो उसकी माँ के प्रोत्साहन से और माता-पिता के निरंतर कष्टों से प्राप्त हुई,
जिसने उसे आत्मविश्वास, और साहस दिया मेरे साथ अपना नसीब आजमाने का।
MBS
POP ramen
PORA

राहुल यात्रा के दौरान दलाल को फोन लगाता है, जिसके हाथों में है एक महंगे फ्लैट की चाबी।
SB
क्रिस्प बैंक
मुँबई जाम

उसका फ्रीलांस काम बढ़ाने की एक जगह।

राहुल जल्द ही समझदार बनेगा और समझेगा कि मेरे भीतर अस्तित्व के लिए उसे अपनी जगह साझा करनी होगी।

वह अपरिचितों के साथ पहले साझा किए
कमरों में, फिर साझा किए मकानों में

घर की यादें साझा करते हुए सोयेगा।

जब तक उसे एक मित्रपरिवार और समुदाय
नहीं मिल जाए, मेरी विराट महानगरी में।

अपना अकेलापन कम करने के लिए।

क्योंकि मैं मुंबई हूँ,
तन्हाईयों का शहर।
जिसकी भूलभुलैया में खुद को खोना है आसान।

जैसे कि वर्षा, जो अपने नवविवाहित पति के साथ है आ रही।
रिपेर
Sales
Repair

लेकर, उसके हाथों में, मां की दी हुई कढ़ाई।

लेकिन हर दिन जब उसका पति काम पर जाता है, वह फ्लैट में अकेली रह जाती है।
और आने वाले महीनों में न केवल यह कढ़ाई खाली रहेगी,

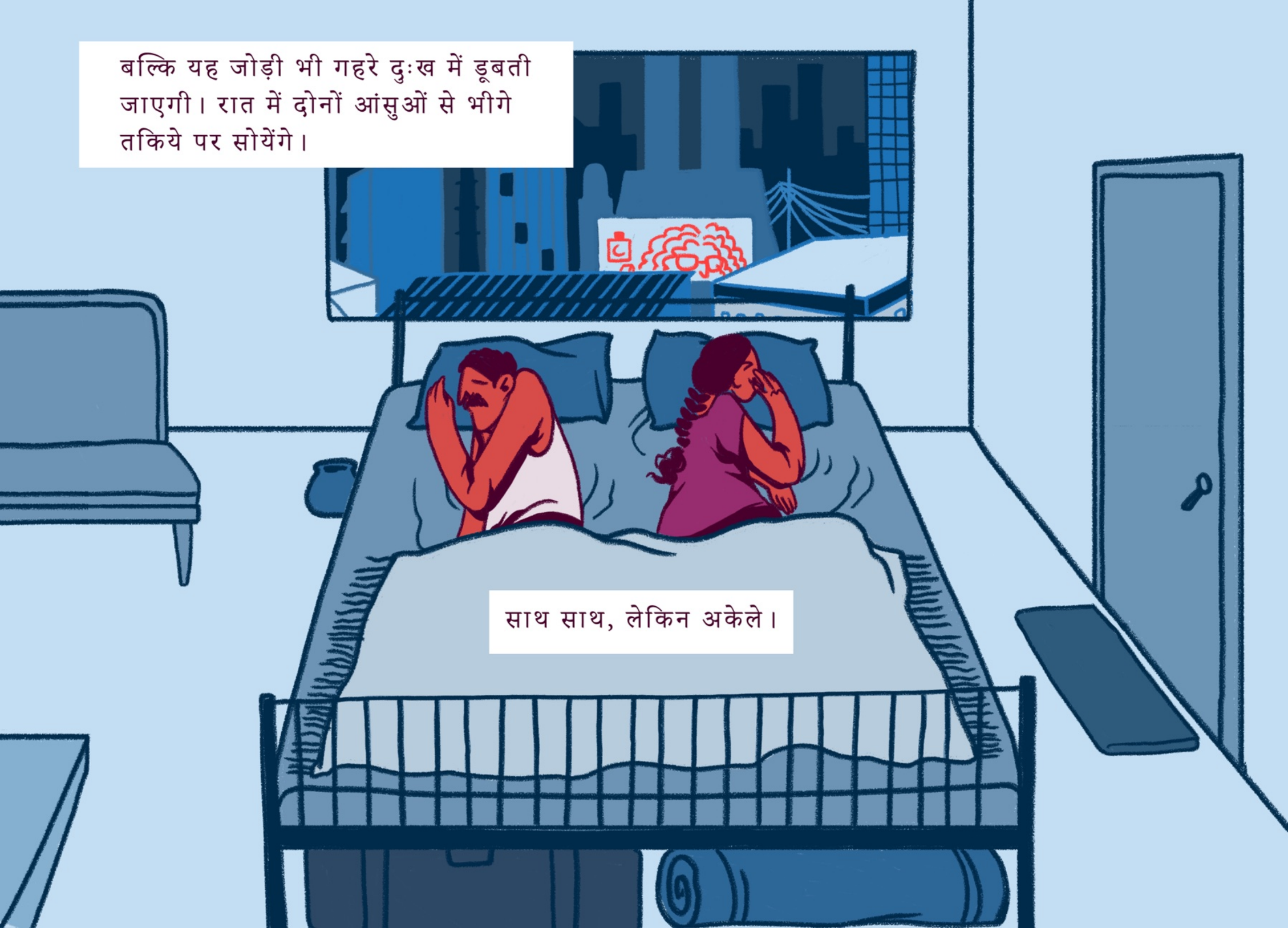
बल्कि यह जोड़ी भी गहरे दुःख में डूबती जाएगी। रात में दोनों आंसुओं से भीगे तकिये पर सोयेंगे।
साथ साथ, लेकिन अकेले।

वर्षा अक्सर अपने घर और गाँव के सपने देखती है।

मेरी विशालता में
भटकते-भटकते,
जिसमें वह अपने समुदाय
से बिछड़ गई है।

बाहर ट्रेन चलती है, हॉर्न बजते हैं,
पड़ोसी झगड़ते हैं-
-लेकिन दोनों के बीच का मौन
असहनीय रहता है।

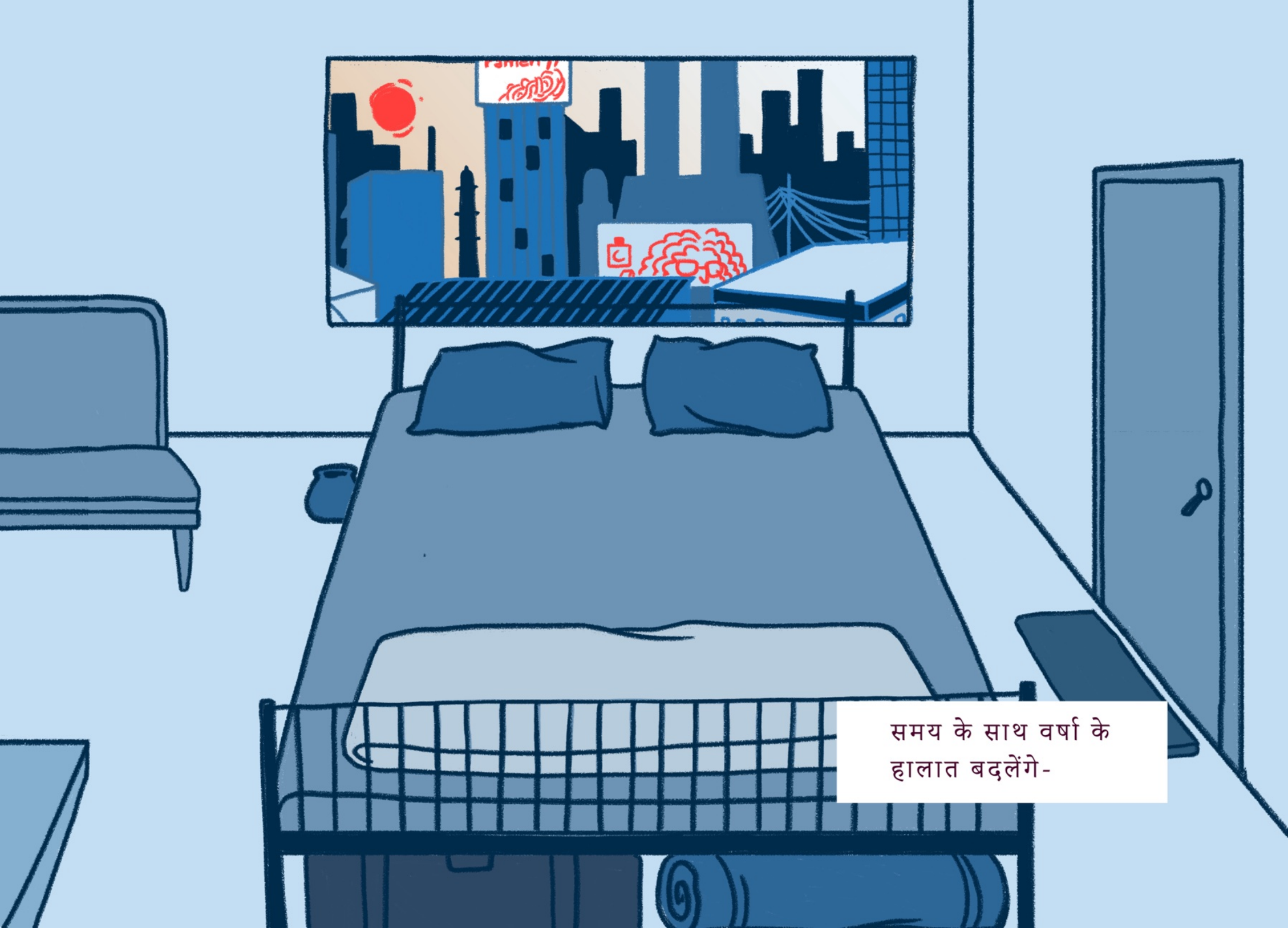
समय के साथ वर्षा के
हालात बदलेंगे-

-और फिर से कढ़ाई चूल्हे पर चढ़ेगी-

-जब वह बांधेगी मित्रता और अपनेपन का धागा, गुरुद्वारा में मिले हुए कुछ सहेलियों के साथ।
और उपहार के रूप में उनके लिए काला जामुन बनाएगी।

क्योंकि मैं मुंबई हूँ, विरोधाभासों का शहर।

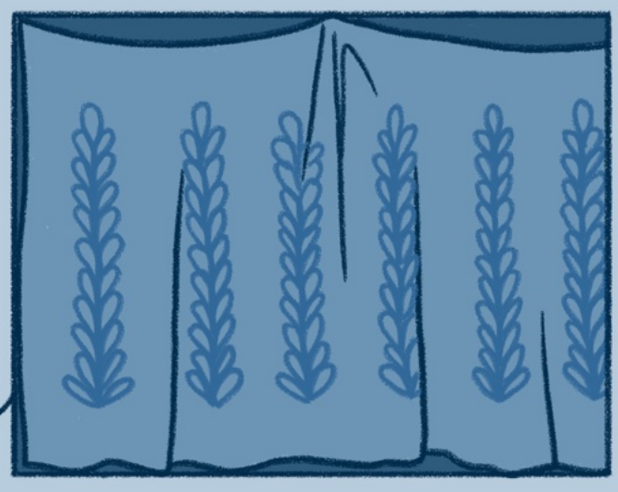

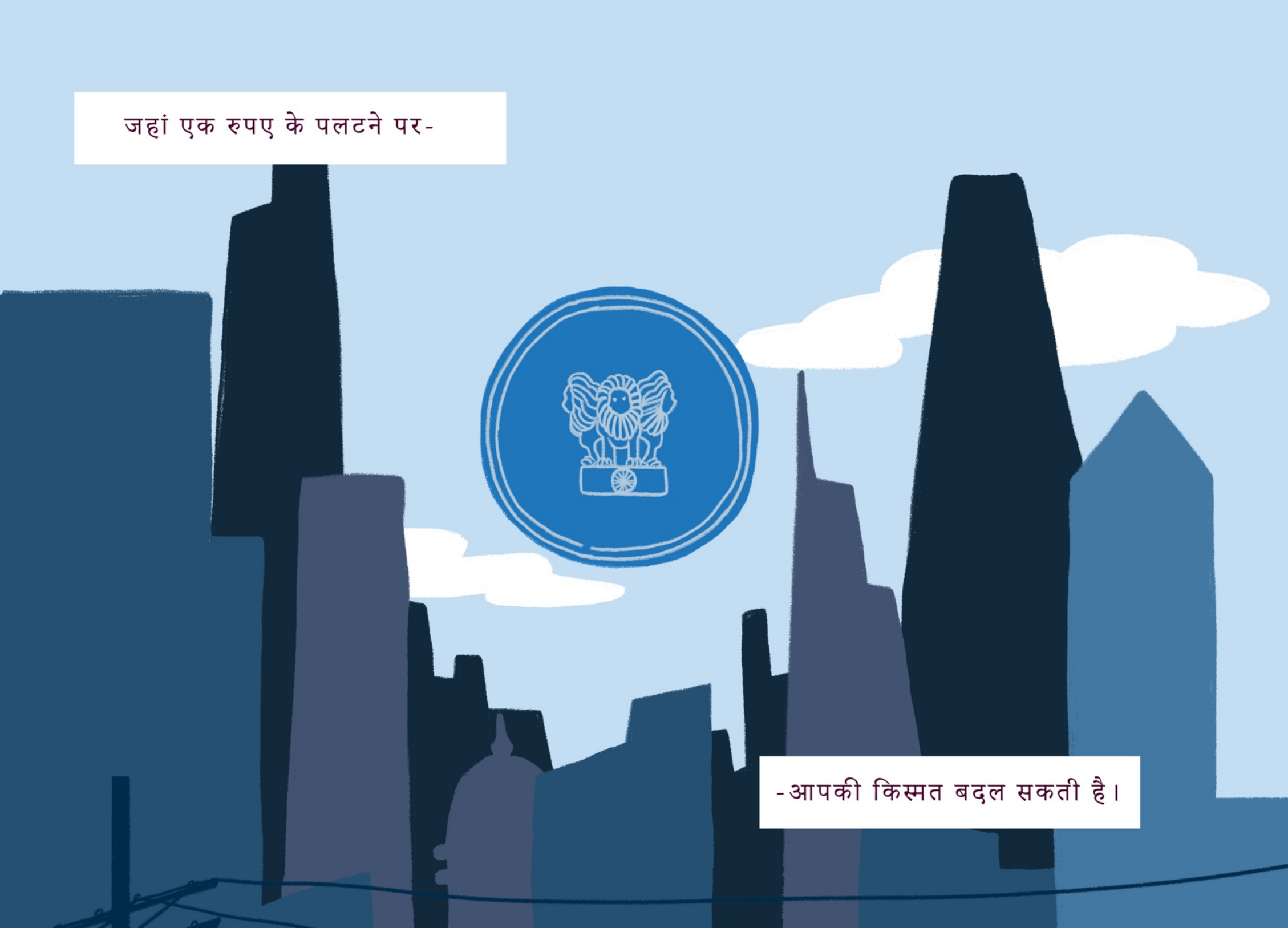
जहां एक रुपए के पलटने पर-
-आपकी किस्मत बदल सकती है।

मैं एक हाथ से झोपड़ी में रहने वाले
गरीबों को गले लगाती हूँ-

-और दूसरे हाथ से चमचमाते शीशे
के मीनारों में रहने वाले अमीरों को।

शंकर कहीं इसी के बीच में रहता है।

वह अब मुझसे नहीं डरता।

GAIKWAD
गायकवाड़ PRINTER
DTP | DTDC | PHOTO

जिस क्षण से वह रत्नागिरी से यहाँ अपने रिश्तेदारों के साथ रहने आया,
GAIKWAD
गायकवाड़ PRINTER
DTP | DTDC | PHOTO

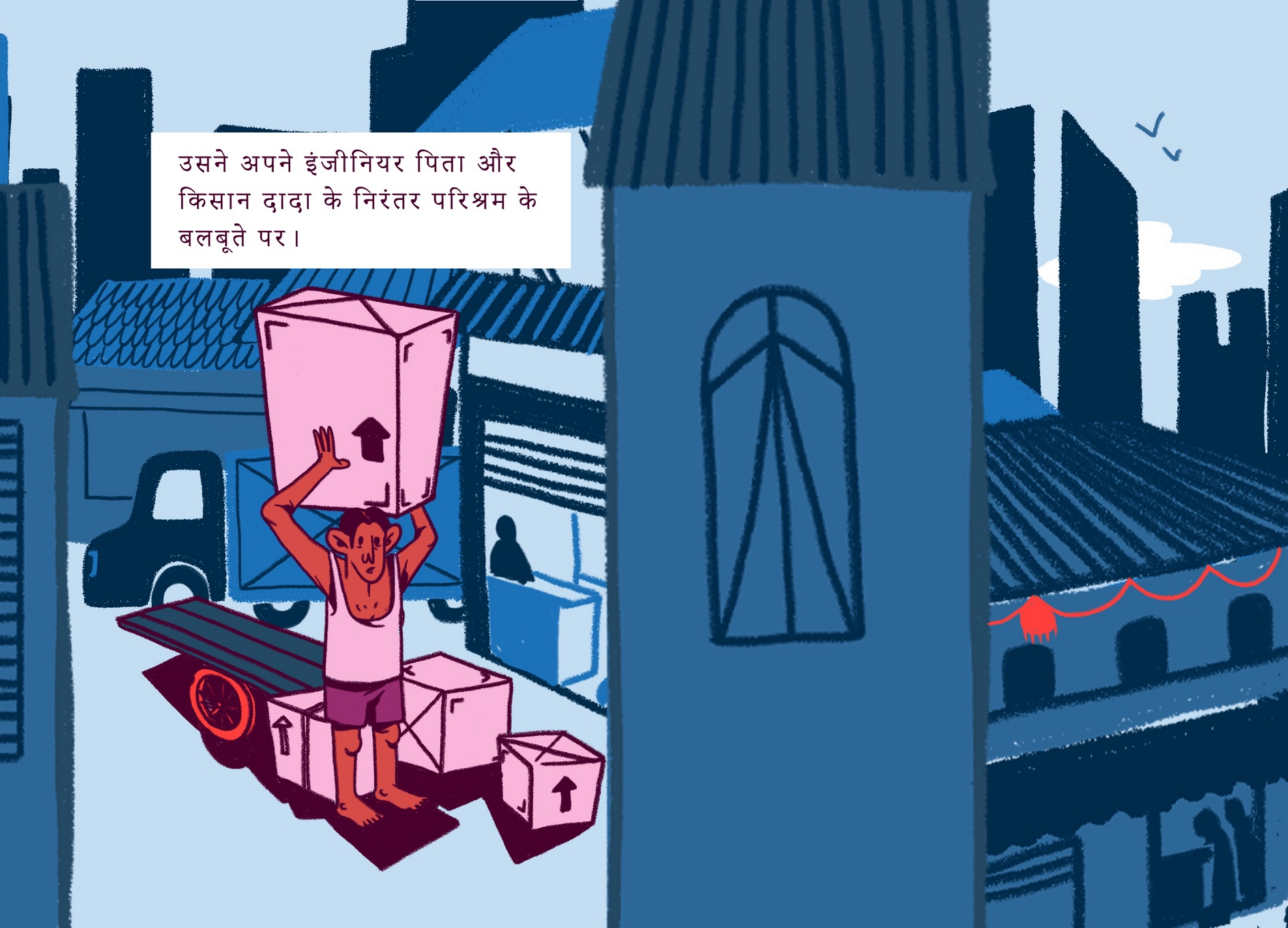
उसने अपने इंजीनियर पिता और
किसान दादा के निरंतर परिश्रम के
बलबूते पर।

अपने परिवार का सर्वप्रथम
व्यवसाय शुरू किया।

अपने गाँव के आम से
बनाए हुए रस से-

-उसने मेहनती मुंबईकरों की प्यास
बुझाई।

अपने माता-पिता को पैसे भेजे
फिर मध्यम वर्ग में अपनी जगह
बना ली-

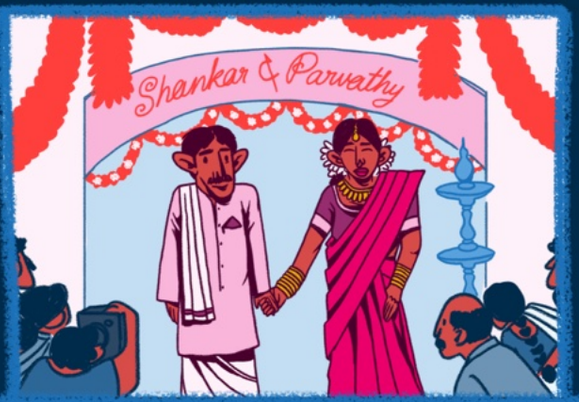

AL CONVENTION CENTER

-अपने गाँव की एक दुल्हन से विवाह कर के जिसका परिवार उसके पिता की नौकरी लगने पर मेरे साथ रहने आ गया था।

लेकिन मुझपर बैठने वाले
धूंध की तरह-
सफलता का धुआं धन के
अभिलाषियों का मन प्रदूषित
करता है।

और शंकर का व्यापारिक भागीदार इस लालच का शिकार होकर-
-उसे व्यवसाय से बाहर करके उसे 85 लाख का नुकसान कराता है।

शंकर डूबने लगता है-

-और उसे केवल उसके ससुराल की सम्पत्ति और आश्रय ही बचा पाते है जिसके सहारे दोनो अपनी जिंदगी नये से बनते है।

आज शंकर ने फिर से अपनी
जिंदगी और घर बसा लिया है

जहाँ से उसके बच्चे दुनिया में पढ़ने
और कमाने जा सकते हैं।

राहुल अभी भी निकलती ट्रेनों को निहारता है।
वह इस भाग-दौड़ से थक चुका है और एक शांत जीवन की कामना करता है।

शायद वह किसी दूसरे शहर में पढ़ाई के लिए चला जाएगा?
वह जवान है। जोखिम उठा सकता है।

लेकिन वर्षा मेरे साथ रहेगी।

उसने अब खुद की जिंदगी बना ली है एक बच्चे और मित्र परिवार के साथ।

उसे और उसके पति को अब संघर्ष नहीं करना पड़ता।

वह नए घर में जाने का सपना देखते हैं।

कुछ बहुत शानदार नहीं, बस एक कमरा और सामने एक छोटा सा आंगन।

क्योंकि मैं मुंबई हूँ, विपरीतता से भरा हुआ एक शहर।
मैं गिरती हूँ। मैं फिर से खड़ी होती हूँ।

Σ
SBS
मैं आपको गिरा सकती हूँ, लेकिन
मैं आपको फिर से खड़ा भी कर
सकती हूँ।

आभार

शोधकर्ता
मिहिका सामंत, मालविका नायर, रूपा नायर, दलजीत सिंह, डॉ. अनु एब्रहाम, डॉ. कारेन लियाओ

अनुसंधान निदेशक
डॉ. मार्टा बिवांड एरडल

चित्रकार
मिया जोस

लेखक
कैरी फ्रांसमैन

निर्माता
कैरी फ्रांसमैन

निर्मिति
पॉजिटिवनेगेटिव्स

निर्देशक
डॉ. बेंजामिन वर्कु-डिक्स

अनुवादक
मिहिका सामंत और डॉ. अनु एब्रहाम

वित्तपोषण
इस परियोजना को यूरोपीय संघ के 'HORIZON 2020' अनुसंधान और नवीनीकरण योजना के तहत यूरोपीय अनुसंधान परिषद (ERC) की तरफ से अनुदान प्राप्त हुआ है (GRANT AGREEMENT क्र. 948403)

हमारे सभी शोध प्रतिभागियों को उनके बहुमूल्य समय के लिए धन्यवाद, जिनकी कहानियाँ इस एनिमेशन का आधार बनीं हैं।

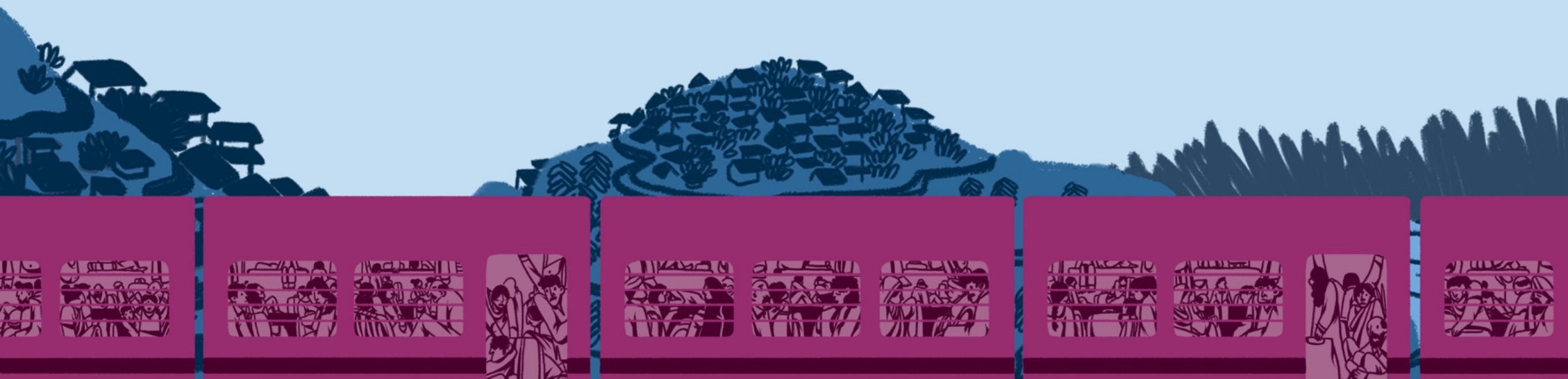

दुनिया में मध्यम वर्ग के वैशाविक वृद्धि का अधिकांश हिस्सा एशिया खंड में है।

माइग्रेशन रिदम्स पीस रिसर्च इंस्टीव्यूट ओस्लो (पीआरआईओ) की एक शोध परियोजना है जो एशिया में उर्ध्वगामी सामाजिक गतिशीलता का अन्वेषण करती है।

अधिक जानकारी के लिए देखें:
prio.org/migrationrhythms

PRIO

POSITIVE NEGATIVES

Funded by the European Union

erc
European Research Council
Established by the European Commission